नं० ७६६-च

वृत्तसंग्रहः (छन्दःशास्त्रम्) ३ पत्र

पत्राणि ३ (अपूर्णम्)

नं. ७६६-च

वृत्तरत्नावलीपत्र

तैरेभिर्दशभिरक्षरैः। समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना। १। सर्वगुर्मो मुखान्तलौ यरावन्तग
त्यत्रगणास्त्रिकाः। २। त्रिकास्त्रिवर्णास्त्रिकाः। सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः। वा पादान्ते त्व
ग गुरुः प्रस्तारे वक्रः स्थाप्यः। अन्यो नुस्वारविसर्गहीनो ह्रस्वो संयुक्तपरश्च मात्रिक एकमात्रो लघुः सच
संयोगः क्रमसंज्ञकः। पुरःस्थितेन तेन स्याल्लघुतापि क्वचिद्गुरोः। ४। श्रुतबोधे। यस्याः प्रथमे पादे [illegible]द्वाद
तुर्थके पंचदश सार्या। १। सर्वाई लक्षणगीतिरार्या स्याद्दइयाद्दयोः। अन्या ई लक्षोपगीतिरुद्गीतिर्व्यस्त
के ननिधने युक्तं। इतरत्त दन्त्यखिलं भवति यदीयमुदितार्यजातिः। १। षड्विषमेष्टौ समे कलास्ता
कलावेतालीयंते रलौ गुरुः। १। कलाः मात्राः। समे पादे निरंतराः केवलं लघुरूपा न स्युः। समाद्विचतु
थ्योर्धाप ... ष्ठानां च मात्राणामवसाने रलौ रगणलघू गुरुश्च। पर्यंतयौ ति चेव प्राबमौपच्छंदसिकं सुधी
भिरुक्तं। यैरिगणायगणा। ... श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमं। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः। १। षष्ठमक्षरं। द्विगुणितवसुल
घुरचला धृतिरिति च। मात्रासमकं नवमो लांतः। जोन्लाव[illegible]धावुधे विश्लोकः। तद्युगलद्वानवासिकास्यात्। वाणाष्टनवसु यदि लश्चित्रा। उपचि
त्रा नवमे परयुक्ते। अष्टाभ्यो गल्पा उपचित्रा। यदतीतकृतविविधलक्ष्मयुतैर्मात्रासमादिपादैः कलितं। अनियतवृत्तपरिमाणयुक्तं प्रथितं जगत्सु
पादाकुलिकं। १। वृत्तस्यैतो विना वर्णैर्गो वर्णौ गुरुभिस्तथा। गुरवो लैर्द्विलैर्निस्यं प्रमाणमिति निश्चितं। १। लो मात्राः। लेई स्वव तौः। । उक्तायां। जा
तौ। गुः श्रीः। अत्युक्तायां। २। गोः स्त्री। मध्यायां। ३। मो नारी। रो मृगी। प्रतिष्ठायां। ४। म्गौ चेत्कन्या। सुप्रतिष्ठायां भौ गिति पंक्तिः। गायत्र्यां। ६। त्यौ स्त
नुमध्या। शशिवदना न्यौ। त्सौ चेद्वसुमती। विद्युल्लेखा मो मः। उष्णिहि। ७। म्सौ गः स्यान्मदलेखा। कुमारललिता ज्सौ ग। सरगैर्हंसमाला।
अनुष्टुभि। ८। मो मो गो गो विद्युन्माला। माणवकं भात् लगौ। ग्लौ गो हंसरुतमेतत्। जौ समानिका गलौ च। प्रमाणिका जरौ लगौ वितानमाभ्यां
यदन्यत्। आभ्यां समानिका प्रमाणिकाभ्यां अन्यद्भिन्नलक्षणं। नाराचकं तरौ लगौ। बृहत्यां। ९। रान्नराविह हलमुखी। पंक्तौ। १०। म्सौ ज्गौ शुद्धवि
राडिदमतं। म्नौ ज्गौ चेति पनवनामकं। जौरगौ मयूरसारिणी स्यात्। भ्मौ सगयुक्तौ रुक्मवती यं। मत्ता ज्ञेया मभसगयुक्ता। नजरगैर्भवेन्मनो
रमा। त्जौ जौ गुरुणेयमुपस्थिता। त्रिष्टुभि। ११। स्यादिंद्रवज्रा यदि तौ जगौ गः। उपेंद्रवज्रा जतजास्ततो गौ। अनंतरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीया
वुपजातयस्ताः। इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदंति जातिष्विदमेव नाम। १। एकत्र पादे चरणद्वये वा पादत्रये चान्यतरः स्थितश्चेत्। तयो रिहान्य

ष्तद्धो हनीयाश्चतुर्दशोक्ता उपजातिभेदाः।११। ननजजलगैर्गदिता सुमुखी। दोधकवृत्तमिदं भभभा गौ। शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः। वातोर्मीयं कथि-
ता म्भौ तगौ गः। म्भौ न्लौ गः स्याद्भ्रमरविलसितं। रान्नराविह रथोद्धता लगौ। स्वागतेति रनभाद्गुरुयुग्मं। मौक्तिकमाला यदि भतनाद्गौ। उपस्थितमिदं ज्सौ ता-
द्गकारौ। पंचरसैः श्रीर्भतनगगैः स्यात्। जगत्यां ।१२। चंद्रवर्त्म निगदंति रनभसैः। जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ। स्यादिंद्रवंशा ततजैरसंयुतौ। इह तोटक-
मंबुधिसैः प्रथितं। द्रुतविलंबितमाह नभौ भरौ। वसुयुगविरतिर्नौ म्यौ पुटोयं। प्रमुदितवदना भवेन्नौ ररौ। नयसहितौ न्यौ कुसुमविचित्रा। रसैर्जसजसा
जलोद्धतगतिः। भुजंगप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः। रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी संमता। भुवि भवेन्नजभरैः प्रियंवदा। त्यौ त्यौ मणिमाला छिन्ना गुहवक्त्रैः। धीरै-
र्भाणि ललिता तभौ जरौ। प्रमिताक्षरा सजससैरुदिता। ननभरसहिता महितोज्ज्वला। पंचाश्वैः छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ। अब्ध्यष्टाभिर्जलधरमा-
ला म्भौ स्मौ। इह वनमालिका नजभयैः स्यात्। स्वरशरविरतिर्ननौ रौ शुभा। भवति नजावथ मालती जरौ। नयुगरयुगयुक्का गौरीमता। अभिनवताम-
रसं नजजाद्यः। पंचमुनि म्भौ स्सा त्सा युता ललना। ललितमभिहितं नौ म्रौ नामतः। द्रुतपदं नभजयैः कलितं स्यात्। अतिजगत्यां ।१३। वेदै रंध्रैर्म्तौ यसगा
मत्तमयूरं। यमौ रौ विज्ञाता चंचरीकावली गः। चतुर्ग्रहैरतिरुचिरा जभौ स्जगाः। तुरगरसयतिर्नौ जितौ गः क्षमा। सजसा जगौ भवति मंजुभाषिणी।
ननतरगुरुभिश्चंद्रिका चतुर्भिः। म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयं। शक्वर्यां ।१४। म्तौ न्सौ गावत्र ग्रहविरतिरसंबाधा। ननरसलघुगैः स्वरैरपरा-
जिता। ननभनलगिति प्रहरणकलिका। उक्ता वसंततिलका तभजा जगौ गः। सिंहोद्धतेयमुदिता मुनिकाश्यपेन। उद्धर्षिणीयमुदिता मुनि-
ट त स्पलागव नो वेला गा व ए

सेतवेनुः श्रीः। अत्युक्तायां ।२। गोः। स्त्री। मध्या-
स्तनुमध्या। शशिवदना न्यौ। त्सौ चेद्वसुमत्
अनुष्टुभि ।८। मो मो गो गो विद्युन्माला। माणवः
यदन्सत। ग्लौ ग्यां समानिका प्रमाणिका ज्यौ
रालुदं मतं। म्नौ जौ चेति पनव नामकं। जै
रमा। त्जौ जौ गुरुणेयमुपस्थिता। त्रिष्टुभि
वुपजातयस्ताः। इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रि

उ वदना भजसनैः सगुरुयुग्मैः। द्विःसप्तच्छिदलोला म्सौ म्सौ गौ चरणे चेत्। अतिशक्वर्यां ।१५। द्वि-
तिरसनवकयतिरियं। वसुहयपतिरिह मणिगुणनिकरः। ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। भ
रदशायतिरियमेला। म्रौ म्यौ यांतौ भवेतास्त प्राष्टकैश्चंद्रलेखा। अष्ट्यां ।१६। भ्रौ त्रिनगाः स्वरात्रवमऋषभगज
लघुगुरुनिरंतरं यदा स पंचचामरः। पंचभकारयुता खगतिर्यदि चांतगुरुः। अत्यष्ट्यां ।१७। रसैरुद्रैः
यला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः। दिङ्मुनिवंशपत्रपतितं भरनभनलगैः। रसयुगहयैर्न्सौ म्रौ स्लौ गो यु-
न तौ ताद्गुरू चेत्। हयदशभिर्नजौ भजजला गुरु नर्कुटकं। मुनिगुहकार्णवैः कृतयतिं वद कोकिलकं। धृत्यां।
नयौ यौ। म्सौ जौ भरसंडतौ कार बाणकैर्हरिणप्लुता। यदि हनयुगलं ततो वेदरेफैर्महामालिका। पंचभ
त्यां ।१८। नयुगगुरुलघूनिरंतरं यदा स पंचचामरः। रसत्वंश्वैर्यमौ न्सौ ररगुरुयुता मेघविस्फूर्जि-

क्रीडितं। कुसुं।२०। ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता भ्लौ गः सुवदना। म्रौ रजौ गलौ भवेदिह दृशेन लक्षणेन
यति युता स्रग्धरा कीर्तितेयं। ख्रा कुसुं। भ्रौ नरनारनाव थ गुरुदिग्र्कविरमं हि भद्रिकमिदं। वि कुसुं। य
यतितं। मत्ताक्रीडा मौ त्नौ नौ न्लौ गिति भवति वसुशरदशयतियुता। सं कुसुं।२४। भूतमुनीनैर्यतिरिह भ
।२५। क्रौंचपदा भ्मौ स्मौ नननान्गाविशुशरवसुमुनिविरतिरिह भवेत्। उत्कृसुं।२६। वस्वीशाश्वछेदोपेतमम
भ्रस्नगा गिति यदि नवरस रसशरयति युतं मपवाहस्यं। यदिह नयुगलं ततः सप्तरेफास्तदा चंडवृष्टि
र्णार्णवव्यालजीमूतलीलाकरोद्दामशंखादयः। प्रचितिकसममिधो धीरधीभिः स्मृतो दंडको नद्वयादु
तौ स लगा दले। भौ युजि भाद्गुरुका उपचित्रं।१। भत्रय मोजगतं गुरुणा चेत्। युजि च नजौ ज्यु युतौ द्रुतम
धा जिभाद्गौ। ओजे तपरौ जरौ गुरुश्चेत् स्मौ जौ गो भद्रविराड् भवेदनोजे। म्सौ सभे जसौ सगुरुयुक्तौ केतुमती।
समे भरनगा ते। जतावनोजे जगुरू गुरुश्चेत्।६। जतौ जगौ गो विषमे समे स्यात्। तौ जौ गमे पा विपरीताख्यानकी।७। स
युगात्सलघू विषमे गुरुः। युजि नभौ च भरौ हरिणप्लुता।८। अयुजि ननरलागुरुः समे। नजमपरवक्त्रमिदं ततो जरौ।९। अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा।१०। वदंत्यपरवक्त्राख्यं वैतालीयं विपश्चितः। पुष्पिताग्राभिधं केचिदौपछंदसिकं तथा।११। विषमे ससजा गुरुः
समे चेत्। सभरा यश्च वसंतमालिका सा।१२। स्यादयुग्मके रजौ समे च। जरौ जरौ गुरुर्यवा त्यवमतीयं।१३। इत्यर्धसमवृत्तानि। ।अथ विषमछंदांसलि
२ ख्यातं। मुखपादोष्टभिर्वर्णैः। परे स्युर्मकराल्लयैः क्रमाद्वृद्धाः। स ततं यस्य विचित्रैः पादैः संपन्नसौंदर्यं। तदभिहितममलधीभिः पदचतुरूर्ध्वमि
धं वृत्तं।१। सजमादिमे सलघुकौ च। नसजगुरुकेष्वथोद्गता। अंघ्रिगतभनजलागयुता सजसा जगौ च रलमेकतः पठेत्।१। म्सौ ज्भौ गौ प्रथमांघ्रिरे
कतः पथगन्यत्। त्रितयं सनजरगास्ततो ननौ स त्रिनपरिकलितजयो। प्रचुपितमिदमुदितमुपस्थितपूर्वं।२। विषमाक्षरपादं वा पादैरसमं दशध
र्मवत्। यच्छंदो नोक्तमत्र गाथेति तत्सूरिभिः प्रोक्तं।२। प्रस्तारो नष्टमुद्दिष्टमेकद्व्यादिलगक्रिया। संख्यानमध्वयोगश्च षडेते प्रत्ययाः स्मृताः।१। पादे
सर्वगुरौ पादाद्गुरोरधो लघुं न्यस्य गुरोरधः। यथोपरि तथा शेषं भूयः कुर्यादमुं विधिं।२। ऊने दद्याद्गुरूनेव यावत्सर्वलघुर्भवेत्। प्रस्तारोयं समाख्यात २
श्छंदोविचितिवेदिभिः।३। नष्टस्य यो भवेदंकस्तस्यार्द्धेर्द्धे समे च लः। विषमे चैकमाधाय तदर्द्धेर्द्धे गुरुर्भवेत्।४। उद्दिष्टं द्विगुणानाद्यादुपर्यंकान्समा
लिखेत्। लघुस्था ये तु तत्रांकास्तैः सैकैर्मिश्रितैर्भवेत्।५। वर्णान्वृत्तभवान्सैकानौत्तराधर्यतः स्थितान्। एकादिक्रमशश्चैतानुपर्युपरि विन्यसेत्।६।
उपांत्यतो निवर्तेत त्यजेदेकैकमूर्ध्वतः। उपर्याद्याद्गुरोरेवमेकद्व्यादिलगक्रिया।७। लगक्रियांकसंदोहे भवेत्संख्याविमिश्रिते। उद्दिष्टांकसमा

हारः सेको वाजनये दिमां।८। संख्यैव द्विगुणैकोना सद्भिरध्वाप्रकीर्त्तितः। तत्तस्यां गुलिकी त्वाद्विमधः कुर्यात्तद्योगुलिं।९। इति हाटिंत्तरत्नाकरे छंदो
निरूपणं। ।वृत्तरत्नावल्यां। रसवेदात्रिकमित कलाविषमपदेष्वसमेहि। हरमात्रा दलविरतिगंल घुदोहा सुविधेहि।१। इयमेव व्यक्तपादा सोरठा क
थिता बुधैः। ।सवैया। आदिगुरुः सगणा मुनिभिर्गुणिता विहिता यदि शुद्धमते सा मदिरेति तदा कथिता यशवंत यशोंकित भूमिपते। चेतसि धारय मोदकृ
ते तदिमामतिसंततदानरते संगररंगमहीपरिनर्त्तितुरंग तुरंग विशंकमते।२। इयमेवांते गुर्वधिका मालती। भगणाः सप्तयघंते गलौ चित्रपदा तदा।
जगणाः सप्त यघंते लगौ सा मल्लिका मता।१। जगणा नौ सप्तकौ ते यगणे माधवी भवेत्। सगणाष्टकतश्चैको गुरुश्चे कमलाभ्युता। राज्यानंगशेखरः। प्र
तापतापतापितप्रतीपभूपतेपार न्लिशानिशाकरप्रभालसद्यशोधना। स्वदानवारिधारयादरिद्रतानलज्वलद्विजालितापहारकस्वभावशोभन।
भुजंगमंगलोदितः प्रसंगसंगतेः सभां तरे निवेदितो विधायकः कविप्रियः। कमाद्ब्रह्मघौ गुरौ यधे घयानिविशतिर्भवेदनंगशेखरः सुधांशुशेखर
प्रियः।३। कवित्वं। मंडितभरत[illegible]षंड दंडितप्रचंडचंडखंडितविपक्षपक्षलक्षलक्षितानते। पारावारपारमानयशोराजिराजमानदानमानसाव
धानमानसमहीपते। [illegible] गौडवंशहंसधीरधीरजसवंतवीरवीरयुद्धशुद्धभावभावितमहीपते। लब्धभागनागनागनगराजविरा
मधाम कविकवित्वकामनाम कोविराजते।१। कवित्तं। आदितुरीये पंचमके षष्ठमथांत्ये स्यादुरुश्चेत्। इंद्रियवेदैश्छेदे रतिरत्नमालिवंधं प्राहफणी।१।

प्रस्तारः
SSSS. ...दीर्घाभिर्वर्णैः। परे स्युर्मकरा लयो। ऽयं भेदः। क्रिया
पर्यन्तं।१। सजमादिमे स लघुकौ च। नसजगुरुकै ८ अंकान्विलिख
कृतः पथगन्यता। त्रितयं सनजरगास्ततो ननौ। ऽ
मिवत्तायछंदोनोक्तमत्र गाथेति तत्वरिभिः। संयोगे सैके सति लब्ध
सर्वगुरुवाधा लघुन्यस्य गुरोरधः। यथोपा यं भेद इति ज्ञायते।।
छंदो विचितिवेदिभिः।२। नष्टस्य यो भवेदंक
लिखेत्तलघुस्यायेत्तु तत्वांकास्तैः सैकैर्मिश्र
उपांत्यतो निवर्त्तेत त्यजेदेकैकमुद्दितः।३ प

आदिमध्यांतगुरवो
भजसा सर्वगुरुर्मः।
आदिमध्यांतलघवो
यरताः सर्वल
घुर्नः।१।

अध्वा
ननु चतुरक्षर वृत्तप्रस्तारः कियति
भूतले प्रस्तार्यते इति पृष्टे प्रस्तारसं
ख्या १६ द्विगुणा ३२ एकोना ३१ जातास्त
... [illegible]
ते इति वक्तव्यं।

एकद्व्यादिलगक्रिया

१				
१	४			
१	३	६		
१	२	३	४	
१	१	१	१	१

चतुरक्षरप्रस्तारे एकगुरव
श्चत्वारो द्विगुरवः षट् त्रिगुरवश्च
त्वारश्चतुर्गुरुश्च भेद एक इति
लघ्वपि एवमेकलघ्वा भेदाः।।

संख्या
लगक्रियांकानां १।४।
६।४।१ इति रूपाणां मि
श्रणे षोडश संख्या लभ्य
ते तथा च चतुरक्षर प्रस्ता
रस्य कियंतो भेदा इति पृष्टे
षोडशेति वदेत्। यथा
१२४८ उद्दिष्टांकानां
।।ऽऽ
समस्तहे १५ सैके षोडश
त्वमेव लभ्यं।।

						...न ध्वगः	मध्यलः
						...गणः	रगणः
						...।	ऽ।ऽ
						...	अग्निः
म्हानत्नगा...							
श्रीः	आयुः	यशः	वृद्धिः	नमक्ले	धनदा यः	रोगः	मृतिः
मित्र	मित्र	भृत्य	भृत्य	शत्रु	सम	सम	शत्रु

मित्र मित्र	मित्र भृत्य	मित्र सम	मित्र शत्रु	भृत्य मित्र	भृत्य भृत्य	भृत्य सम	भृत्य शत्रुः
सिद्धि	जय	अल तं	बहुपी डा	कार्य सिद्धि	सर्व नाशः	हानिः	पराज यः
सम मित्र	सम भृत्य	सम सम	सम शत्रु	शत्रु मित्र	शत्रु भृत्य	शत्रु सम	शत्रुः
साम्यं	विपत	नैष्फ ल्यं	शून्यं	शून्यं	नारी नाश	हानि	[illegible] नाशः।

३

३